08 खेल में साहस और श्रेष्ठता : क्रिकेट से गाथाएँ

एस. गिरिधर,
वी. जे. रघुनाथ

हमें यह कहने में बिल्कुल कोई झिझक नहीं है कि हम दोनों क्रिकेट को लेकर रूमानी हैं। हम यह भी मानते हैं कि बाहरी तौर पर क्रिकेट के गुण–विशेषताओं में चाहे कितना भी बदलाव आया हो, साहस और श्रेष्ठता के सर्वोत्कृष्ट गुण इसमें हमेशा गुंथे रहेंगे। इस आलेख में हम वर्णन करेंगे कि खेल में साहस और श्रेष्ठता क्यों हमारे दिल को छूते हैं, क्यों वे इस खेल को ऊँचा उठाने वाला पक्ष हैं?

हम साहस की उन कहानियों से शुरुआत करेंगे जहाँ खिलाड़ियों ने शारीरिक और जज्बात की पीड़ा से ऊपर उठकर हिम्मत की अमर गाथाएँ रचीं। बल्लेबाजी करते हुए साहस का प्रदर्शन बहुत ही जीवन्त छवियाँ हमारी आँखों के सामने लाता है– जैसे, चेहरे पर चोट खाए हुए, खून थूकते बल्लेबाज का पारी बचाने के लिए मैदान में डटे रहना। 50 वर्ष पहले वेस्टइण्डीज में ग्रिफिथ द्वारा कान्ट्रेक्टर को गिराना किसी भारतीय बल्लेबाज के चोटिल होने की सबसे हृदयविदारक कहानी है। हमारे समाचारपत्रों की श्वेत–श्याम तस्वीरों में वेस्टइण्डीज के कप्तान वॉरेल आपातकालीन ऑपरेशन के लिए रक्तदान करने वाले लोगों की पँक्ति में सबसे आगे खड़े दिखाई दे रहे थे। कान्ट्रेक्टर फिर कभी भारतीय टीम के लिए नहीं खेल सके परन्तु हम दोनों ने उन्हें उस लगभग घातक चोट से उबरने के बाद उसी प्रतिबद्धता से पश्चिमी क्षेत्र के लिए बल्लेबाजी करते देखा है।

1964 में चेन्नई में भारत चौथे दिन की समाप्ति पर अपने चार बेहतरीन बल्लेबाज गँवाने के बाद डांवाडोल स्थिति में था। पाँचवें दिन की सुबह मांजरेकर, जिनके अँगूठे पर क्षेत्ररक्षण के दौरान चोट लगी थी, हनुमन्त सिंह के साथ बल्लेबाजी के लिए मैदान पर उतरे। मांजरेकर को दस्ताने का अँगूठे वाला हिस्सा काटना पड़ा क्योंकि सूजा हुआ अँगूठा दस्ताने में नहीं समा रहा था। चोटिल अँगूठा ढका हुआ नहीं था। आक्रामक तेज गेंदबाज मैकेन्जी की प्रत्येक तूफानी बाल को खेलते समय दर्द को झेलते मांजरेकर ने उस सुबह के सत्र में मैच को बचाने के लिए जी–जान लड़ा दी। अन्ततः दोपहर में भोजन के समय जब वे आउट हुए तो वे हार के बावजूद विजेता की तरह वापिस लौट रहे थे–पूरा दर्शक–समूह उनके सम्मान में खड़ा हो गया।

1980 के दशक में साहस की एक कहानी बार–बार सुनाई जाती है, जबकि दूसरी कभी–कभार ही सुनने में आती है। मोहिन्दर अमरनाथ को मार्शल की बॉल से चोट लगी, उनके मुँह से दाँत के साथ–साथ खून निकला और उन्हें अस्पताल जाना पड़ा। उसी खून में सनी हुई कमीज में अगले दिन बल्लेबाजी की शुरुआत करते हुए उन्होंने पहली बॉल को जो एक बाउन्सर थी, मैदान से बाहर पहुँचा दिया। उनका हौसला रत्तीभर भी कम नहीं हुआ, कदम पीछे हटाना उनकी फितरत में ही नहीं था। उनका साहस एक किंवदन्ती बन गया। इससे दो वर्ष पहले की बात है, आस्ट्रेलिया में भारत के सन्दीप पाटिल एक बाउन्सर का शिकार हो गए, उन्हें खेल से हटा लिया गया और मैच की शेष अवधि में वे बेहोशी की सी अवस्था में रहे। लेकिन उनके कप्तान चाहते थे कि पाटिल दोबारा बल्लेबाजी करें। बीमार और डगमगाते पाटिल बल्लेबाजी के लिए उतरे, कुछ गेंदों तक संघर्ष किया और आउट हो गए। उनके कप्तान गावस्कर वापसी पर सारे रास्ते उनकी प्रशंसा करते रहे। असल बात तो यह थी कि दोबारा बल्लेबाजी के लिए उतरकर पाटिल ने डर के भूत को भगा दिया था–यही सन्देश उन्होंने मैदान में दोबारा उतरकर दिया था।

चोट और गहन पीड़ा से ऊपर उठकर गेंदबाजी के कमाल दिखाने की भी अनेक दिल को छू जाने वाली कहानियाँ हैं। हम भारतीय निश्चित रूप से 1981 में मेलबोर्न में लंगड़ाते हुए कपिलदेव का जीत के लिए गेंदबाजी करना नहीं भूलेंगे। हाल के समय की दिल को छू लेने वाली कहानी 2002 में भारतीय टीम के कैरेबियन दौरे पर अनिल कुम्बले से सम्बद्ध है। डिल्लन की बॉल से जबड़ा चोटग्रस्त होने के बाद पट्टियों से जकड़े हुए और सर्जरी के लिए वापसी उड़ान का कार्यक्रम होने के बावजूद कुम्बले हमेशा की तरह मजबूत इरादे और एकाग्रता के साथ गेंदबाजी के लिए मैदान में उतरे। उन्होंने लारा का विकेट चटकाया और विजेता की तरह हाथ ऊपर उठाए चल पड़े। यह प्रसंग जितनी बार भी देखा और याद किया जाएगा इसमें निहित ताकत कभी भी मन्द नहीं पड़ेगी।

हमारे लिए सबसे भावुक और विचलित करने वाली कहानी दिसम्बर 1953 में न्यूजीलैण्ड द्वारा दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध टेस्ट मैच को बचाने के लिए उतरी चोटिल बर्ट सच्लिफ और भावनात्मक रूप से पस्त बॉब ब्लेयर की जोड़ी के बारे में है। एक बाउंसर गेंद से बुरी तरह चोटिल सच्लिफ सिर पर पट्टियों का वजन लिए हुए हॉस्पिटल से लौटे थे और जवाबी आक्रमण में अविश्वस्नीय ढंग से सात छक्के जड़ दिए। सच्लिफ ने शारीरिक चोट के विरुद्ध संघर्ष किया था; उधर उनके साथ खेल रहे बॉब ब्लेयर की कहानी कहीं अधिक मर्मस्पर्शी है। अभी–अभी खबर मिली थी कि ब्लेयर की मंगेतर एक रेल दुर्घटना में काल का शिकार हो गई है। दसवें विकेट की साझेदारी में सच्लिफ के जोड़ीदार की हैसियत से ब्लेयर द्वारा क्रीज पर डटे रहने के साहस की घटना धैर्य से दुख का सामना करने की हैरतअंगेज कहानी बन गई। अन्ततः जब ब्लेयर आउट हुए तभी उन्होंने अपनी आँखों से आँसू छलकने दिए। एक–दूसरे को बाहों में भरे, रोते हुए और भावनात्मक रूप से परास्त, जब यह जोड़ी वापिस लौटी तो उस दिन एक भी अफ्रीकी व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसकी आँखें नम नहीं थीं।

मँसूर अली खान पटौदी को सलाम किए बिना साहस के विषय पर कोई भी लेख अधूरा ही रहेगा। 1962 में इंग्लैण्ड में एक मोटर दुर्घटना में अपनी एक आँख गंवा चुके पटौदी ने अपना लगभग सम्पूर्ण टेस्ट क्रिकेट एक आँख से ही खेला। क्रिकेट इतिहास में यह अपने आप में अद्वितीय बात है। परन्तु 1967 में मेलबोर्न में पटौदी ने केवल एक पैर पर बल्लेबाजी भी की थी क्योंकि उन्हें घुटने के पीछे की नस में चोट लगी थी। टीम की हार के बावजूद पटौदी एक चमकता हुआ सितारा साबित हुए क्योंकि उन्होंने क्रिकेट इतिहास की दो बहुत ही आक्रामक पारियाँ (75 और 85) खेली थीं। रेडियो पर एलन मैकगिल्व्रे को सुनते हुए या अगली सुबह 'द हिन्दू' में जैक फिंग्लटन को पढ़ते हुए यह बिल्कुल स्पष्ट था कि हम एक साहसिक कारनामे के गवाह बन रहे हैं। इतना ही नहीं, 1975 में, जब उनकी शक्तियाँ ढलान पर थीं और शरीर में भी वह लोच–लचक न रही थी, कोलकाता में रॉबर्ट्स की तेज रफ्तार गेंद से पटौदी का जबड़ा बुरी तरह से कुचला गया था। दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच ठोड़ी पर टाँकों के साथ पटौदी मैदान पर लौटे और अपनी चोट को भुलाकर गेंद को बाउण्डरी के दर्शन करवाने की विस्फोटक झड़ी लगा दी। यह धधकता हुआ प्रति–आक्रमण संक्षिप्त ही था – उन्होंने केवल 36 रन बनाए। जब पटौदी मैदान से बाहर आए तो कोलकाता के दर्शक जो यह जानते थे कि अब वे उन्हें दोबारा बल्लेबाजी करते हुए नही देख पाएँगे, उन्हें यादगार विदाई देने के लिए उनके सम्मान में खड़े हो गए।

इस आलेख का अगला भाग महान खेल भावना की कहानियों के विषय में है। हर व्यक्ति में कोई जन्मजात प्रवृत्ति या विशिष्टताएँ होती हैं जिनसे उसकी खेल भावना निर्धारित होती है।

हमारे खेलना आरम्भ करने के साथ ही कुछ अपेक्षाएँ निर्धारित कर दी जाती हैं – खेल भावना को बनाए रखना, एकात्मकता को निर्दिष्ट करने वाली भावना, निष्ठा, ईमानदारी और व्यक्तिगत हितों से ऊपर टीम के हितों को महत्व देना आदि। अब हम खेल के मैदान पर समय, संस्कृतियों और भूगोल की सीमाओं से ऊपर उठकर सहृदयता, उदारता और भद्रता की सर्वाधिक भावुक घटनाओं की याद दिलाएँगे। इनमें से अधिकतर शानदार खेल घटनाओं ने अपनी कीमत भी वसूली है – खेल का पलड़ा विरोधी टीम के पक्ष में झुक गया, इनमें से कुछ खिलाड़ियों ने टेस्ट टीम में अपनी जगह खो दी; परन्तु इनमें से किसी भी बात ने उनके दिमाग को विचलित नहीं किया।

हम कुछ भी कहें, वास्तव में कोई भी व्यक्ति प्रतिस्पर्धा करने और जीतने के लिए खेलता है और आस्ट्रेलिया तथा इंग्लैण्ड के बीच ऐशेज शृंखला जीतने के संघर्ष और घोर प्रतिद्वन्द्विता जैसा और कोई उदाहरण नहीं है। जब इंग्लैण्ड ने 2005 में आस्ट्रेलिया को 2 रन से हरा दिया तो आस्ट्रेलिया के बल्लेबाज ब्रेट ली घोर निराशा में अपने घुटनों के बल बैठ गए। अँग्रेज खिलाड़ी जीत की खुशियाँ मना रहे थे और एक–दूसरे को गलबाहियाँ

डाल रहे थे, परन्तु इंग्लैण्ड की जीत के नायक फ्लिन्टाफ ब्रेट ली को सांत्वना देने के लिए बढ़ चुके थे। निराशा में डूबे ली को बाहों में घेरे फिलन्टाफ की तस्वीर शायद उस वर्ष की सबसे यादगार तस्वीर थी।

ऐसी भावना केवल खिलाड़ियों तक ही सीमित नहीं है। कुछ क्रिकेट मैदानों को भी ऐसी खेल भावना से जुड़े होने का आशीर्वाद प्राप्त है। दिसम्बर 1998 में पूरा भारत निराशा में डूबा हुआ था जब भारत मात्र 12 रन से पाकिस्तान के हाथों मैच हार गया और तेन्दुलकर के महानतम में से एक शतक भी काम न आया। चैन्नई के दर्शकों को सबसे अधिक ठेस लगनी चाहिए थी लेकिन स्टेडियम में मौजूद 60,000 लोगों ने महान उदारता का परिचय दिया और खड़े होकर तालियाँ बजाते हुए पाकिस्तानी टीम का अभिनन्दन किया। इस अभिनन्दन के बीच पाकिस्तान की टीम द्वारा अपनी जीत के उल्लास में चेपॉक मैदान में चक्कर लगाना हमेशा के लिए स्मृतियों में अंकित हो गया।

ऐसे प्रेरक व्यवहार के लिए कप्तान तो मिसाल बन सकते हैं। मुम्बई में जुबिली टेस्ट (1982) में इंग्लैण्ड की टीम 5 विकेट पर 85 रन के साथ लड़खड़ा रही थी। बॉब टेलर को कैच आउट घोषित कर दिया गया, परन्तु टेस्ट मैच में भारत के कप्तान विश्वनाथ ने अम्पायरों से टेलर को वापिस बुलाने का आग्रह किया क्योंकि उनके विचार में बल्लेबाज आउट नहीं था। टेलर दोबारा क्रीज पर आ गए और उन्होंने बॉथम के साथ एक मैच जिताने वाली भागीदारी निभाई। इस सबमें विश्वनाथ के लिए कुछ भी विशेष नहीं था क्योंकि उनके हिसाब से तो खेलने का दूसरा कोई तरीका ही नहीं था। यह हमेशा बहस का विषय रहा है कि बल्लेबाज को आउट होने पर स्वयं ही मैदान छोड़ देना चाहिए या अम्पायर को निर्णय करने देना चाहिए? विश्वनाथ के लिए यह किसी बहस का प्रश्न ही नहीं था। हमने कितनी ही बार देखा कि किस तरह गेंद का बल्ले से स्पर्श होकर लपके जाते ही, क्षेत्ररक्षक द्वारा अपील करने से भी पहले, वे बल्ला उठाकर चल देते थे।

गेंदबाजों में क्रिकेट की खेल–भावना का सच्चा राजदूत वेस्टइण्डीज के कर्टनी वाल्श से बेहतर शायद ही कोई और हो। 1987 में पाकिस्तान के विरुद्ध एक वर्ल्ड कप मैच में वाल्श ने तब सदा के लिए सम्मान अर्जित कर लिया जब एक विकट स्थिति में उन्होंने उस पा. किस्तानी बल्लेबाज को रन आउट करने से इन्कार कर दिया जो नॉन–स्ट्राइक सिरे पर वाल्श के गेंद फेंकने से पहले ही भागकर कुछ अतिरिक्त दूरी का फायदा लेने की कोशिश कर रहा था। वाल्श ने इस बल्लेबाज को रन आउट करने की अपेक्षा उसे ऐसा नहीं करने की चेतावनी भर दी। इस खेल भावना की कीमत वेस्टइण्डीज को मैच हारने के रूप में चुकानी पड़ी (और वे टूर्नामैन्ट से बाहर हो गए), परन्तु वाल्श अन्य किसी भी दूसरे तरीके से जीतना नहीं चाहते थे।

क्रिकेट में खेल भावना की बात आमतौर से एक बहुत ही सरलीकृत ढाँचे में रखकर की जाती है। एक दृष्टिकोण है कि जबसे इस खेल में शौकिया से पेशेवर, और इसके बाद आधुनिक समय के अत्यधिक वाणिज्यिक रूप जैसे बदलाव हुए हैं, खेल के साथ जुड़ी भद्रता समाप्त हो गई है। दूसरे वर्ग का मत है कि क्योंकि हम हर चीज टी.वी. पर देखते और

सुनते हैं, हमें लगता है कि खेल भावना विकृत हो गई है, जबकि शायद ऐसा हुआ नहीं है। दोनों ही मत कुछ सीमा तक सही हो सकते हैं परन्तु सच्चाई इससे कहीं अधिक है। हम आशा करते हैं कि इस लेख के माध्यम से हम कुछ ऐसे प्रमाण प्रस्तुत करने में कामयाब रहे होंगे जो दर्शाते हैं कि उदार चेष्टाओं ने आज के दौर की भी उतनी ही शोभा बढ़ाई है जितनी पहले दौरों की बढ़ाती थीं। एक विडम्बनापरक मायने में, आधुनिक समय में बहुत अच्छा टी.वी. कवरेज शायद क्रिकेट की भावना को बचाए रखने का माध्यम बन रहा हो क्योंकि कोई भी क्रिकेटर नहीं चाहेगा कि वह गंवार और असभ्य दिखाई दे; वह यह भी नहीं चाहेगा कि उसकी निष्ठा पर प्रश्न उठते हुए दिखें। यहाँ से खेल भावना के अधिक स्वैच्छिक प्रयासों तक की यात्रा शायद बहुत ज्यादा लम्बी नहीं होगी।

टिप्पणी :

यह लेख फरवरी और मार्च में espncricinfo.com पत्रिका के लिए दो भागों में लिखे गए लेख का संक्षिप्त रूप है। जो पाठक ऐसे और अधिक प्रसंग पढ़ने के इच्छुक हैं, वे नीचे दी गई लिंक पर जाएँ –

http://blogs.espncricinfocom/inbox archives/2010/03/nobility_in_a_hard_game.php and
http://blogs.espncricinfo.com/inbox/archives/2010/02/courage_in_a_hard_game.php

गिरि *अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में रजिस्ट्रार और विश्वविद्यालय संसाधन केन्द्र के प्रमुख हैं।* ***रघु*** *एडिसन पेन्ट्स के सेवानिवृत्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी और वरिष्ठ प्रशिक्षण सलाहकार हैं। दोनों में टेस्ट क्रिकेट के प्रति गहरा लगाव है। रघुनाथ 60 और 70 के दशकों में मुम्बई और चैन्नई लीग में देश के अनेक टेस्ट क्रिकेटरों के साथ खेल चुके हैं। गिरि और रघु कॉर्बारण्डम यूनिवर्सल, चैन्नई में मिले और 1980 के दशक में हिन्दू ट्रॉफी और चैन्नई की अन्य प्रतियोगिताओं में खेले। दोनों लेखकों ने क्रिकेट पर अनेक लेख लिखे हैं जिनमें खेल के समृद्ध इतिहास के उदाहरण भरे हुए हैं। उनसे यहाँ सम्पर्क किया जा सकता है : giri@azimpremjifoundation.org तथा raghunathj@gmail.com*